अजमेर शहर में पर्यटन विकास की संभावनाएँ एवं प्रवृत्तियों का एक भौगोलिक विश्लेषण

A Geographical Analysis of Potential and Trends of Tourism Development in Ajmer city

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
की पी.एच.डी. उपाधि हेतु
शोध प्रारूप की प्रस्तावित रूपरेखा

सत्र 2015–16

शोध निर्देशक
डॉ. कीर्ति चौधरी
व्याख्याता (भूगोल विभाग)
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

अनुसन्धायिका
श्रीमती रजनी वरूण
व्याख्याता (भूगोल विभाग)
सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर

भूगोल विभाग
सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर (राज.)

Scanned with CamScanner

सारणी – सूची

क्रम संख्या	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	विद्यार्थी का नाम	1
2	अनुसंधान का कार्य शीर्षक	1
3	स्थिति	1
4	प्रस्तावित अनुसंधान कार्य का महत्व	
5	उपलब्ध साहित्य की समीक्षा	
6	प्रस्तावित कार्य एवं उपलब्ध अनुसंधान कार्य में कमी	
7	अनुसंधान कार्य के मुख्य उद्देश्य	
8	मुख्य परिकल्पनाऐं	
9	विधि तंत्र	
10	विस्तृत प्रस्तावित अनुसंधान के अध्याय अनुसार	
11	सन्दर्भ–सूची	

Scanned with CamScanner

प्रस्तावित अनुसंधान कार्य संक्षिप्त प्रारूप
Format for outline of Proposed Research Work

1. Name of Scholar	-	Mrs. Rajni Varun
विद्यार्थी का नाम	-	श्रीमती रजनी वरूण
2. Title of the Research work	-	A Geographical Analysis of Potential and Trends of Tourism Development in Ajmer city
अनुसंधान कार्य	-	अजमेर शहर में पर्यटन विकास की सम्भावनाएँ एवं प्रवृत्तियों का एक भौगोलिक विश्लेषण
3. Location	-	(A) Samrat Prithviraj Chauhan Governement College, Ajmer सम्राट पृथ्वीराज चौहान, राजकीय महाविद्यालय, अजमेर
(b) Geographical Area of Investigation	-	Ajmer
अनुसंधान कार्य का भौगोलिक क्षेत्र	-	अजमेर

Scanned with CamScanner

4. प्रस्तावित अनुसंधान कार्य का परिचय, महत्त्व और उद्देश्य

(Introduction, Importance and Objectives of Proposed Investigation)

परिचय :- मनुष्य जन्म से ही ज्ञान पिपासु रहा है उसकी यह स्वभाविक प्रवृत्ति है कि वह नये स्थान के भौगोलिक पर्यावरण का अवलोकन समीक्षा एवं अनुभूति अपनी जिज्ञासा के अनुसार करता हैं। यही कर्मशीलता जिसमें वह आनंदानुभूति करता हैं जिसका प्रतिफल पर्यटन एवं उससे संबंधित सभी प्रकार के उपक्रम व उद्योग है जो पूर्णरूपेण पर्यटक की रूचि आय, अवस्था या उद्देश्य पर अवलम्बित है। वर्तमान पर्यटन का स्वरूप विकास की विभिन्न विद्याओं एवं अवस्थाओं का सतत् प्रयास है।

पर्यटन की उत्पत्ति वृद्धि एवं विकास मानव अधिवास एवं सभ्यता के इतिहास से घनष्ठि रूप से संबंधित हैं। संस्कृत साहित्य में पर्यटन शब्द को तीन अर्थो में प्रयुक्त किया गया है जो इस प्रकार है-

संस्कृत साहित्य में पर्यटन

भ्रमण	देशाटन	तीर्थाटन
ज्ञान प्राप्ति, मनोविज्ञान आनन्द प्राप्ति के लिए बाहर जाना।	धनोपार्जन, व आर्थिक लाभों हेतु एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करना।	धार्मिक कृत्यों व धार्मिक उद्देश्य हेतु यात्राएँ करना।

पर्यटन शब्द व्यापक है और इसके संबंध में आज अलग-अलग मान्यताएँ व धारणाएँ विश्व स्तर पर हैं। जहां आदिकाल से इसे व्यक्तित्व विकास की क्रिया के रूप में समझा गया वही आज पर्यटन विश्व का सर्वाधिक महत्वपूर्ण, गतिशील, रोजगारोन्मुख श्रमअभिमुख, धुआरहित एवं विदेशी मुद्रा अर्जित करने का साधन है। आज यह न केवल विदेशी मुद्रा अर्जित करने वाला एक महत्वपूर्ण साधन है अपितु यह राष्ट्रीय एकता, एवं अन्तर्राष्ट्रीयवाद का भी पोषक है और अन्तर्राष्ट्रीय शांति, सद्भाव, भाईचारा तथा सामाजिक सांस्कृतिक एवं राजनीतिक विचारों के विनिमय का भी एक मंच है।

Scanned with CamScanner

पर्यटन के महत्व को स्वीकार करते हुए इसे विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने तरीकें से व्याख्यित करने का प्रयास किया है।

पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने पर्यटन के बारे में लिखा है कि, ''हमें देशी व विदेशी मित्रों का स्वागत इस उद्देश्य से करना चाहिए कि पर्यटन से न केवल विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है बल्कि आपसी सद्‌भाव और सूझबूझ की भावनाएँ प्रबल होती है। आज जितनी आवश्यकता इस सद्‌भावना की है उतनी किसी अन्य चीज की नहीं।''

जान नेसविट ने अपनी पुस्तक ''ग्लोबल पैराडाक्स'' में कहा है कि 21वीं सदी में पर्यटन विश्व का सबसे बड़ा उद्योग होगा तथा विश्व की अर्थव्यवस्था में पर्यटन विपणन की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण होगी। नि:सन्देह पर्यटन आज हमारी सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक गतिविधियों का प्रमुख केन्द्र है।

प्राचीन समय से ही भारत में पर्यटन या तीर्थाटन प्रमुख रहा है। राजस्थान में अजमेर पर्यटन के दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अजमेर ऐतिहासिक, धार्मिक, प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से भरपूर होने के कारण देशी व विदेशी पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। पर्यटन की पर्याप्त संभावनाएं होने के बावजूद अजमेर पर्यटन की उपेक्षा का शिकार होने से शोधार्थी द्वारा शोध के लिए इस क्षेत्र का चयन किया गया।

एक प्रश्न जो कि वर्तमान परिपेक्ष्य को देखते हुए सभी के मन में उठता हैं कि किस क्षेत्र में कितना पर्यटन विकसित है ओर क्षेत्र की उन्नति में यह कितना सहयोगी रहा है? प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने में प्रस्तुत शोध जिसका शीर्षक ''अजमेर शहर में पर्यटन विकास की संभावनाएँ एवं प्रवृत्तियाँ'' (एक भौगोलिक विश्लेषण) एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है इसमें हम सांख्यिकीय तकनीक व्यक्तिगत सर्वे व विभिन्न मानचित्र विधियों को प्रयुक्त करेंगे।

प्रस्तुत शोध पर्यटन के विकास की ओर बढ़ते कदमों, भावी संभावनाओं के उदाहरण प्रस्तुत करेगा तथा साथ ही यह शोध पर्यटन के प्रभावों समस्याओं और सुझावों को पेशकर **''अतिथि देवो भवो:''** की अवधारणा को विकसित करने का एक लघु प्रयास करती है।

Scanned with CamScanner

प्रस्तावित अनुसंधान कार्य का महत्व
(Importance of Proposed Investigation)

पर्यटन के अन्तर्गत विश्व के विकसित देशों विशेषत: संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप इत्यादि में राष्ट्रीय स्तर से लेकर क्षेत्रीय जिला व स्थानीय स्तर पर अध्ययन हो रहा है। वर्तमान समय में भारत में राष्ट्रीय, प्रादेशिक एवं स्थानीय स्तर पर तो शोधकार्य हो रहा है लेकिन यहाँ जितना गहन स्तर पर शोध होना चाहिए उतना नहीं हुआ है। अभी भी अच्छे स्तर पर शोध हेतु विश्लेषणात्मक अध्ययन की आवश्यकता है जिससे पर्यटकों को सम्पूर्ण आकर्षण स्थलों की जानकारी प्राप्त हों।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् राजस्थान के अनेक छोटे पर्यटन स्थल धार्मिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक, सौन्दर्यता से परिपूर्ण होते हुए भी यातायात एवं पर्यटन सुविधाओं के अभाव के कारण पर्यटकों की पहुँच से बहुत दूर रह गये। यातायात क्रान्ति के पश्चात् इन नगरों में तीव्र गति से द्रुतगामी यातायात साधनों का विकास हुआ इससे पर्यटकों की संख्या में तीव्र वृद्धि हुई और आधुनिक साधनों का अधिकाधिक उपयोग होने लगा। इस प्रकार पर्यटन में प्रयुक्त पुराने साधनों एवं तत्संबंधी सुविधाओं की अपेक्षा नवीन साधनों एवं सुविधाओं के उपयोग में परिवर्तन आया। यह परिवर्तन अजमेर में भी दृष्टिगत होता है। अनुसंधायिका अजमेर नगर की निवासी होने के कारण प्रत्येक पक्ष की प्रत्यक्षदर्शी है जिसने अनुभव किया कि इस परिवर्तन का गहन अध्ययन करने के लिए यहाँ के सौन्दर्य स्थलों एवं यहां विद्यमान पर्यटन सुविधाओं की खोज करना क्षेत्रीय विकास हेतु नितान्त आवश्यक है। इन कारणों से प्रभावित होकर ही अनुसंधायिका ने **''अजमेर शहर में पर्यटन विकास की संभावनाएँ एवं प्रवृत्तियाँ'' (एक भौगोलिक विश्लेषण)** शीर्षक का चयन किया है।

Scanned with CamScanner

उद्देश्य

(Objectives)

प्रस्तुत शोधकार्य का अजमेर के क्षेत्रीय विकास की दृष्टि से अत्यधिक महत्व है अतः प्रस्तुत शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित है-

(i) अजमेर में पर्यटन के विकास और महत्व का अध्ययन करना।

(ii) अजमेर की भौतिक, जनांकिकी, आर्थिक, सामाजिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं का अध्ययन करना।

(iii) अजमेर आने वाले घरेलू एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या ज्ञात करना।

(iv) भ्रमण के लिए अजमेर को चुनने संबंधी पर्यटकों के निर्णय को प्रभावित करने वाले तत्वों की विवेचना करना।

(v) सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त आकड़ों के आधार पर अजमेर के स्वदेशी एवं विदेशी पर्यटकों के विचारों का विश्लेषण करना।

(vi) अजमेर में पर्यटन की आधारभूत संरचना (आवास सुविधा, यातायात सुविधा, भोजन बैंकिंग एवं मनोरंजन की सुविधा) का व्यापक स्तर पर अध्ययन करना।

(vii) अजमेर में पर्यटन से संबंधित अभिनव प्रवृत्तियों को ज्ञात करना।

(viii) पर्यटन से पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन करना।

(ix) अजमेर में विद्यमान पर्यटन की संभावनाओं का अध्ययन करना।

(x) अजमेर में पर्यटन से संबंधित समस्याओं से अवगत कराना।

(xi) सांस्कृतिक परम्पराएँ बचाने के लिए तथा आधुनिक औद्योगित जीवन से परम्परागत मूल्यों पर प्रभाव को रोकने के लिए विभिन्न उपाय खोजना।

Scanned with CamScanner

5. विषय का पुनरावलोकन
(Review of Literature)

भारत में पर्यटन पर केवल राष्ट्रीय स्तर पर एवं कुछ प्रादेशिक स्तर पर ही कार्य हुआ है। जनपद, क्षेत्रीय एवं स्थानीय स्तर पर शोध कार्य बहुत कम हुआ है इस हेतु पर्यटन पर गहन अध्ययन की आवश्यकता है अजमेर में पर्यटन पर शोधपरक अध्ययन पूर्व में नहीं हुआ है। वर्तमान समय में पर्यटन से संबंधित पूर्व में लिखे गए विभिन्न शोध व उपलब्ध साहित्य का अध्ययन किया गया।

- सन् 1933 में सैनी सुरेन्द्र कुमार ने अपने शोध ग्रंथ ''जयपुर नगर के पर्यटन का भौगोलिक विश्लेषण'' में पर्यटन के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला।
- सन् 1989 में मेहर इरफान ने ''टूरिज्म इन वेस्टर्न राजस्थान (ए ज्योग्राफिकल एप्रेजल)'' नामक शोध ग्रंथ में पश्चिमी राजस्थान में विकसित पर्यटक स्थलों का भौगोलिक विवचेन प्रस्तुत किया हैं।
- सन् 1999 में दाधीच रामेश्वर लाल ने ''इश्यूज एण्ड मेनेजमेण्ट ऑफ हयूमन रिर्सोस फोर टूरिज्म सेक्टर ऑफ इण्डिया'' नामक शोध ग्रंथ में पर्यटन उद्योग की सरंचना पर प्रकाश डाला।
- Bhatia A.K. ने सन् 1986 में "Tourism Development (Principles and practices)" नामक पुस्तक में पर्यटन की योजनाएँ और विकास, पर्यटन का आर्थिक व सामाजिक महत्व तथा पर्यटन में ट्रेवल एजेन्सियों की भूमिका का वर्णन किया हैं।
- Gil S. Puspinder ने सन् 1996 में अपनी पुस्तक "Dynamics of Tourism" Vol.iv (Tourism and Hotel Management) में पर्यटन और आवास तथा पर्यटन के सांस्कृतिक प्रभावों को वर्णित किया है।

Scanned with CamScanner

- सन् 1996 में Kumar Nirmal ने अपनी पुस्तक "Tourism and Economic Development" में हिमाचल प्रदेश में पर्यटन द्वारा आर्थिक विकास को प्रस्तुत किया गया हैं।
- नेगी डॉ. जगमोहन द्वारा सन् 1992 में ''पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त'' नामक पुस्तक प्रकाशित की गई है इस पुस्तक में पर्यटन का महत्व, पर्यटन संबंधी सुविधाओं एवं पयर्टन उद्योग में सरकार के योगदान को प्रस्तुत किया गया है।
- सन् 2004 में व्यास राजेश कुमार द्वारा प्रस्तुत पुस्तक ''राजस्थान में पर्यटन प्रबन्ध'' में पर्यटन उद्योग से जुड़ी महत्वपूर्ण समस्याओं के साथ पर्यटन प्रबन्ध के विश्लेषण का प्रयास अद्वितीय हैं।
- सन् 2005 में Aggarwal Parteek ने "Tourism and Economic Growth Development" नामक पुस्तक में पर्यटन और आर्थिक वृद्धि व आर्थिक प्रभावों की व्याख्या की है।
- सन् 2004 में रावत ताज ने ''पर्यटन का प्रभाव एवं प्रबन्ध'' नामक पुस्तक के माध्यम से पर्यटन उद्योग के प्रबन्धकीय ढाँचे, पर्यटन के प्रभावों तथा पर्यटन उद्योग के विकास की भावी संभावनाओं की विशद् विवेचना की है।
- सन् 2007 में रैना ए.के. और सिंह डॉ. किशोर द्वारा ''राजस्थान में पयर्टन प्रबन्ध'' (सिद्धान्त और व्यवहार) नामक पुस्तक में सेवा एवं संचालन व्यवस्था, विपणन और संसार, नीति और नियोजन सभी आयामों का समावेश किया गया हैं।
- सागर अरूण द्वारा सन् 2008 में प्रस्तुत पुस्तक ''भारत के पर्यटन स्थल'' के कुछ आकर्षण है–
- कैसे जाए, कहाँ ठहरे कब जाए आदि सहित विस्तारपूर्वक जानकारियाँ।

Scanned with CamScanner

कुछ टिप्स पर्यटन पर जाने से पहले।

- भारत के प्रमुख राष्ट्रीय उद्यान व अभ्यारण्यों की जानकारियाँ।
- मुख्य तीर्थ स्थलों की जानकारियाँ।
- मुखर्जी आर.के. ने सन् 1970 में अपनी पुस्तक ''प्राचीन सभ्यता का इतिहास'' में पर्यटन के महत्व को बताया।
- Nikunj Tarun ने सन् 2006 में प्रस्तुत पुस्तक "Tourism Planing in 21st Century" में पर्यटन नियोजन में शोध की भूमिका व पर्यटन और आधुनिक सूचना विधि को प्रस्तुत किया है।
- सन् 2004 में Bhel Neetu ने "Tourism management" नामक पुस्तक में पर्यटन उद्योग का वर्गीकरण पर्यटन की योजना और विकास, विकासशील देशों में पर्यटन और अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन तथा इसका भविष्य आदि का वर्णन किया हैं।
- Bariassoulis Helen और Straaten Jan Vander द्वारा प्रस्तुत पुस्तक "Tourism and the Environment-Regional Economic and policy issues" में पर्यटन के प्रादेशिक व आर्थिक मुद्दों की विशद् विवचेना की हैं।
- सन् 2014 में Sharma K.K. ने अपनी पुस्तक "Tourism and socio cultural Development" नामक पुस्तक में विकासशील देशों में पर्यटन रोजगार के मुद्दे पर्यटन और सामाजिक सांस्कृतिक विकास के मुद्दे को प्रस्तुत किया हैं।
- दीक्षित डॉ. के.के. और गुप्ता डॉ. जे.पी. ने सन् 2003 में ''पर्यटन के विविध आयाम'' नामक पुस्तक में छत्तीसगढ़, बोधगया (बिहार), पंचमढ़ी, आगरा व मरूस्थलीय क्षेत्रों में पर्यटन का विकास व संभावना तथा विकास में रेल व वायु सेवाओं के योगदान आदि का विवेचन किया हैं।

Scanned with CamScanner

- सन् 2006 में Chauhan Ravee ने "Heritage and Cultural Tourism" नामक पुस्तक में पर्यटन को सांस्कृतिक धरोहर के रूप में विश्लेषित किया गया है।
- सन् 2005 में Dixit Sourabh Kumar द्वारा पुस्तक "Tourism and Economics" में पर्यटन का राष्ट्रीय व स्थानीय विकास तथा पर्यटन के आर्थिक प्रभाव को प्रस्तुत किया हैं।
- Sharma K.K. ने "Tourism and Development" नामक पुस्तक में पारिस्थतिकी पर्यटन तथा पर्यटन के आर्थिक प्रभाव तथा वैश्वीकरण को प्रस्तुत किया हैं।
- निर्मल राजेन्द्र कुमार ने सन् 2004 में ''बूंदी जिले में पर्यटन विकास का मूल्यांकन एक भौगोलिक अध्ययन'' पर शोध कार्य किया है इसमें बूंदी जिले के भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा वर्तमान क्षेत्रीय पर्यटन विकास की दिशा, प्रभाव एवं भविष्य का वर्णन किया है।
- Samant Rohini ने सन् 2007 में "An Appraisal of Carrying capacity of Tourist Destinations in Ajmer" (A study in Geography of Tourism) पर शोध गंथ प्रस्तुत किया है इस शोध में अजमेर में पर्यटकों के आकर्षण के कारण, आधारभूत सुविधाएँ, पर्यटन के वातावरण पर प्रभाव का विवेचन किया गया है।
- Yadav Prashant ने सन् 2007 में "Tourism in Alwar District" (A Geographical Analysis) पर शोध ग्रंथ प्रस्तुत किया है इसमें अलवर में पर्यटन की आधारभूत सुविधाएँ मेलों व त्यौहारों का वर्णन किया है।
- सिंह कुलदीप ने ''भौगोलिक धरोहर संसाधनों का स्थानिक प्रभाव व मूल्यांकन'' (अजमेर व नागौर जिलों का एक अध्ययन) पर शोध ग्रंथ प्रस्तुत किया है। इसमें नागौर व अजमेर जिले की सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण और यहां के मेलों व त्यौहारों का विवेचन किया है।

Scanned with CamScanner

6. प्रस्तावित कार्य एवं उपलब्ध अनुसंधान कार्य में कमी

(Research Gaps Identified in the proposed field of investigation)

वर्तमान शोध कार्य पर्यटन भूगोल के क्षेत्र में नई दिशा प्रदान करेगा। धर्म एवं पर्यटन की दृष्टि से राजस्थान के हृदयस्थल अजमेर का विशेष महत्व हैं। पूर्व में राजस्थान में पर्यटन उद्योग पर अनेक शोध कार्य हो चुका है लेकिन अभी तक किसी ने भी अपने शोध कार्य द्वारा अजमेर शहर में पर्यटन विकास की संभावनाएँ एवं प्रवृत्तियों की ओर ध्यान आकर्षित नहीं किया हैं।

वर्तमान शोध कार्य अजमेर में पर्यटन विकास की प्रवृत्तियों के शोध अन्तराल को पूरा करते हुए पर्यटन भूगोल में एक नवीन अध्याय के रूप में कार्य करेगा। शोध कार्य के द्वारा यह प्रयास किया जायेगा कि किस तरह आधुनिक विकास करके पर्यावरण ह्रास को बचाते हुए सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखा जा सकता है।

7. परिकल्पनाएँ

(Hypothesis)

(i) अजमेर शहर में स्वदेशी व विदेशी पर्यटकों की संख्या में उत्तरोतर वृद्धि हुई हैं।

(ii) अजमेर शहर में पर्यटकों के लिए आधारभूत सुविधाएँ पर्याप्त नहीं हैं।

(iii) पर्यटन विकास के कारण अजमेर शहर की आय में अभिवृद्धि हुई हैं।

Scanned with CamScanner

8. विधि तंत्र
(Research Methodology)

शोध संबंधी अध्ययन को क्रमबद्ध बनाने तथा सही तकनीक का उपयोग कर सही निष्कर्ष निकालने के लिए आकड़ों का संकलन किया जायेगा जो इस प्रकार है-

(i) प्राथमिक स्रोत :-प्राथमिक आकड़ों का संकलन अवलोकन, साक्षात्कार और प्रश्नावली के माध्यम से किया जायेगा। सर्वेक्षण के दौरान विभिन्न आकड़ों का संकलन व अध्ययन करने के लिए क्षेत्र का अवलोकन किया जायेगा। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को उपयोगी बनाने हेतु पर्यटन क्षेत्र के दुकानदारों, होटल मालिकों, स्थानीय निवासियों तथा पर्यटकों से प्रश्नावली तथा साक्षात्कार द्वारा महत्वपूर्ण सूचनाएँ व सुझाव प्राप्त किये जायेगें।

(ii) द्वितीयक स्रोत :-द्वितीयक आकड़ों का संकलन विभिन्न निजी व सरकारी संस्थाओं, आर.टी.डी.सी. डिपार्टमेंट ऑफ टयूरिज्म आर्ट एण्ड कल्चर से किया जायेगा। अन्य आवश्यक सूचनाएँ विभिन्न पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रतिवदेन और ग्रंथों से एकत्रित की जायेगी।

सांख्यिकी विधियाँ :- अध्ययन को क्रमबद्ध बनाने एवं निष्कर्ष निकालने के लिए विभिन्न सांख्यिकीय विधियों (समान्तर मध्य, मध्यिका, प्रमाण विचलन, प्रसरण, सह संबंध, टी टेस्ट और काई टेस्ट आदि) का प्रयोग किया जायेगा।

मानचित्र व छायाचित्र :- क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान उपयोगी परिस्थितियों को कैमरे द्वारा छायाचित्रों के माध्यम से भी अवलोकन किया जायेगा। पर्यटक स्थलों की दुर्दशा तथा कलात्मकता दर्शाने वाले अनेक छायाचित्र को आवश्यकतानुसार शोध प्रबन्ध में संलग्न किया जायेगा। सूक्ष्म अध्ययन के लिए सामग्री को ग्रह्मा बनाने हेतु मानचित्रों, आरेखों, चित्रों तथा चार्टो का भी निर्माण किया जायेगा।

Scanned with CamScanner

१. अधुसंधान का प्रारूप
(Research Design)

"अजमेर शहर में पर्यटन विकास की संभावनाएँ एवं प्रवृत्तियाँ" (एक भौगोलिक विश्लेषण) नामक नाम शीर्षक के अन्तर्गत प्रस्तुत शोध प्रबन्ध द्वारा अजमेर में पर्यटन के वर्तमान स्वरूप का विवचेन कुल आठ अध्यायों के माध्यम से करने का प्रयास किया जायेगा-

प्रथम अध्याय :- इस अध्याय में पर्यटन का परिचय, अर्थ, उत्पत्ति, विकास, प्रकार, अध्ययन की आवश्यकता, उद्देश्य, परिकल्पनाएँ, विधि तंत्र और पूर्व में लिखे गये विभिन्न शोध एवं उपलब्ध साहित्य की समीक्षा इत्यादि बिन्दुओं को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत किया जायेगा।

द्वितीय अध्याय :- इस अध्याय में अजमेर की स्थिति, अवस्थिति, उच्चावच, अपवाह तंत्र एवं झीले, जलवायु, वन सम्पदा एवं मानव संसाधन इत्यादि बिन्दुओं का विश्लेषण किया जायेगा।

तृतीय अध्याय :- इस अध्याय में पर्यटन विभाग का संगठन, पर्यटन विकास एवं राज्य सरकार, अजमेर का ऐतिहासिक विकास, अजमेर के विभिन्न पर्यटन स्थल और सांस्कृतिक धरोहर, अजमेर में पर्यटन का विकास एवं र्प्यटन विकास के उत्तरदायी घटकों का अध्ययन किया जायेगा।

चतुर्थ अध्याय :- इस अध्याय में अजमेर में आने वाले देशी व विदेशी पर्यटकों की संख्या तथा पर्यटन का विकास, संभावनाओं एवं प्रवृत्तियों का क्षेत्रीय अध्ययन हेतु प्रतिदर्श विधि द्वारा आकड़ों का संकलन कर सांख्यिकी विश्लेषण द्वारा निष्कर्ष निकाले जायेंगे।

Scanned with CamScanner

पंचम अध्याय:- इस अध्याय में पुष्कर मेले एवं उर्स मेले का महत्व, मेले का प्रबन्ध मेले की उपयोगिता अजमेर शहर के अन्य मेलों, तीज व त्यौहारों आदि की विशद् व्याख्या की जायेगी।

षष्ठम् अध्याय:- इस अध्याय में पर्यटन के विकास के परिणामस्वरूप पड़ने वाले अनुकूल प्रभावों एवं प्रतिकूल प्रभावों का विश्लेषण किया जायेगा।

सप्तम अध्याय:- इस अध्याय में पर्यटन विकास के कारण पर्यटकों, स्थानीय निवासियों, उद्योगपत्तियों व व्यवसायियों और स्थानीय प्रशासन को होने वाली समस्याओं को प्रस्तुत किया जायेगा।

अष्ठम् अध्याय:- इस अध्याय में अजमेर शहर में पर्यटन विकास की संभावनाओं एवं प्रवृत्तियों के संबंध में निष्कर्षों व सुझावों को प्रस्तुत किया जायेगा।

Scanned with CamScanner

सन्दर्भ ग्रंथ सूची
(Bibliography)

1. **Acharya Ram**, 1977, "Tourism in India", R.B.S.A. Publishers, Jaipur
2. **Agarwal Prateek**, 2005, "Tourism and Economic Growth and Development", Mohit Publication, New Delhi.
3. **Akhtar Javed**, 1990, "Tourism Management in India", Ashish Publication, New Delhi.
4. **Anand M.M.**, 1976, "Tourism and Hotel Industry in India: A study in Management," Prentice Hall, New Delhi
5. **Bala Usha**, 1990, "Tourism in India Policy and Perspectives", Arushi Publication , New Delhi.
6. **Behl Neetu**, 2004, "Tourism Management", Vishvabharti Publications, New Delhi.
7. **Bhatia A.K.**, "Tourism Development," Sterling Publishers, new Delhi.
8. **Burkat A.J.**, 1976, "Tourism Part, Present and Future," Heinemann, London.
9. **Chauhan Ravee**, 2006, "Heritage and Cultural tourism" ,vista International Publishing house, Delhi.
10. **Jacob Robinet**, 2005, "New Facets of Tourism management", Abhijeet Publications, Delhi

Scanned with CamScanner

11. **Kumar V.K.**, 1982, "A study in Environmental Pollution", Tara Book Agency, Varanasi, Kanpur city.

12. **Lickorish J.L.**, 1985, "The Travel Trade," Practice Press Ltd., London.

13. **Medlik, S. Charles, Kaiser**, "Tourism Planning and Development", CBI Publication Company, Boston.

14. **Mill R.C.**, 1985, "The Tourism System", An Introductory text, prentice Hall, New Jersey

15. **Morrisom A.M., Negi J.S.**, (1982), "Tourism and Travel concepts and Principles," Gitanjali Publishing House, New Delhi.

16. **Negi Jagmohan**, 2004, "Tourist Guide and Tour operation", planning and organising, Kanishka Publishers, Distributors, New Delhi.

17. **Punia Bijender**, 1994, "Tourist management problems and prospects", Ashish Publishing house, New Delhi.

18. **Raina A.K. & Lodha R.C.**, 2004, "Fundamentals of Tourism system," Knishka Publishers, Distributors, New Delhi.

19. **Ranga Mukesh & Nigam Davesh**, 2003, "New Approaches in Tourism Management," Abhijeet Publications, Delhi.

20. **Seth Pran Nath**, 1978, "Successful Tourism planning and management," cross section Publication, New Delhi.

Scanned with CamScanner

21. **Sharma K.C.**, (1996), "Tourism Policy Planning and Strategy," Efficient offset Printers, New Delhi.

22. **Sharma K.K.**, (2004), "Tourism and Socio-cultural Development," Sarop & Sons, New Delhi.

23. **Sharma Vivek**, 1991, "Tourism in India," Arihant Publication, Jaipur

24. **Singh Ratandeep**, 1998, "Infrastucture of Tourism in India", Kanishka Publishers, New Delhi.

25. **Singh Tejvir** (2011), "Tourism and Tourism Industry", New height, New Delhi.

26. **Tarun Nikunj**, 2006, "Tourism Planning in 21st Century", Alfa Publication, New Delhi.

27. **चौहान तेजासिंह**, 2004, ''राजस्थान का भूगोल'',कुलदीप पब्लिकेशन, अजमेर

28. **जैन महावीर, जैन क्रान्ति**, 2008, ''राजस्थान लक्ष्य''. मनु प्रकाशन, अजमेर

29. **तिवाड़ी शिव प्रसाद**, 1987, ''विश्व पर्यटन और यात्रा उद्योग'', पब्लिशर्स आत्मा राम एण्ड संस, नई दिल्ली

30. **दीक्षित के.के., गुप्ता जे.पी.**, 2003, ''पर्यटन के विविध आयाम'', तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली

31. **नेगी जगमोहन**, 2004, ''पर्यटन एवं यात्रा के सिद्धान्त '', तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली

32. **भल्ला एल.आर.**, 2008, ''राजस्थान का भूगोल '', कुलदीप पब्लिकेशन, अजमेर

Scanned with CamScanner

33. **भीष्मपाल एच.**, 1997, ''पर्यटको का आकर्षण राजस्थान'', सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली

34. **राधेश्याम जोशी, एस.एस.जोशी**, ''राजस्थान दर्शन'', प्राईम पब्लिकेशन्स , भीलवाड़ा (राजस्थान)

35. **रावत राज**, 2004, ''पर्यटन का प्रभाव प्रबंधन'', तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली

36. **रैना ए.के.सिंह किशोर**, 2006, ''राजस्थान में पर्यटन प्रबन्ध सिद्धान्त और व्यवहार'', अभिनव प्रकाशन, अजमेर

37. **व्यास राजेश कुमार**, 2004, ''राजस्थान में पर्यटन प्रबन्ध'', राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

38. **शर्मा एच.एस., शर्मा एम.एल**, 2008, ''राजस्थान का भूगोल'', पंचशील प्रकाशन, जयपुर

39. **शर्मा के.के.**, 1989, ''राजस्थान में पर्यटन विकास'', प्रगति प्रकाशन, जयपुर

40. **शर्मा संजय कुमार**, 2004, ''पर्यटन एवं पर्यटन उत्पाद'', तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली

41. **सागर अरूण**, 2008, ''भारत के पर्यटन स्थल'', राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर

42. **सिंह सविन्द्रर**, 2008, ''पर्यावरण भूगोल'', प्रयाग पुस्तक भवन, इलाहाबाद

43. **सक्सेना एच.एम.**, 2005, ''पर्यावरण एवं प्रदूषण'', राजस्थान हिन्द्र ग्रंथ अकादमी, जयपुर

Scanned with CamScanner

प्रतिवेदन एवं वेब साइट

वार्षिक प्रतिवेदन- राजस्थान पर्यटन कला और संस्कृति विभाग, 2005-2006

हेरिटेज होटल, विरासत से परिचय, सुजस जून जुलाई, 2004-05

www.rajtours.com

www.rtdc.com

www. rajasthantourism.com

श्रीमती रजनी वरूण
अनुसन्धायिका
व्याख्याता (भूगोल विभाग)
सनातन धर्म राजकीय
महाविद्यालय, ब्यावर

Outline of the Synopsis Approved

31/5/16

Lecturer in Geography
S.P.C Govt. College, Ajmer

डॉ. कीर्ति चौधरी
शोध (पर्यवेक्षक)
व्याख्याता (भूगोल विभाग)
सम्राट पृथ्वीराज चौहान,
राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

Scanned with CamScanner

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय,अजमेर

क्रः एफ–15 / शोध / (26 / 2015) / भूगोल / मदसविवि / 11664. दिनांकः 26/4/2017

स्थाई पंजीयन–पत्र

रजनी वरूण,
पत्नि श्री महेन्द्र सिंह,
मं. न. 715 / 29, आनन्दपुरी,
मेयोलिंक रोड., अजमेर–305001

विषयः– स्थाई पंजीयन की सूचना।

विषयान्तर्गत प्राचार्य, एस.पी.सी.राजकीय महाविद्यालय, अजमेर, के माध्यम से अग्रेषित आपका पत्रांक 678, दिनांक 20.02.2017 जिसके द्वारा आपने इस कार्यालय के पृष्ठांकित पत्रांकः 2291–92, दिनांक 11.12.17 में वर्णित प्रवेश शुल्क और पंजीयन शुल्क की राशि जमा कराना सूचित किया है, के आधार पर विश्वविद्यालय के अध्यादेश 124.11 के अन्तर्गत निम्नांकित शोध शीर्षक पर शोध कार्य करने हेतु आपका स्थाई पंजीयन किया जाता है। **स्थाई पंजीयन की दिनांक 18.07.2016 है।**

अंग्रेजी में : **" A Geographical Analysis of Potential and Trends of Tourism Development in Ajmer City "**

हिन्दी में : **" अजमेर शहर में पर्यटन विकास की संभावनाएँ एवं प्रवृत्तियों का एक भौगोलिक विश्लेषण "**

नामांकन नं. 1998 / 1292

26/4/17

सहायक कुलसचिव (शोध)

Scanned with CamScanner